उपसर्ग

उपसर्ग - अर्थ एवं प्रयोग

वे शब्दांश जो धातुओं तथा शब्दों से पूर्व लगाए जाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। ये सामान्यत: 22 होते हैं।

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर, निस्, दुर, दुस्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

उपसर्ग लगने पर धातु का अर्थ परिवर्तित हो जाता है, और कहा भी गया है-

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।

विहारहारसंहार प्रहार परिहारवत्।।

आइए अब इनसे जुड़े कुछ उदाहरण देखें।

1. आ

यदि इसे किसी धातु से पहले लगाया जाए तो अर्थ उलट जाता है।

जैसे:

'गच्छति' का अर्थ है, जाता।

परन्तु यदि हम 'आगच्छति' लिखें तो इसका अर्थ है, आता है।

ऐसे ही, 'दा' का अर्थ है, देना।

परन्तु (आ + दा) का अर्थ होता है, लेना।

2. परा

'परा' उपसर्ग भी अर्थ को उलट देता है।

जैसे:

'जय' का अर्थ है, विजय तथा परा + जय = पराजय का अर्थ है, हार जाना।

3. वि

इसका अर्थ भी 'अभाव' के रुप में लिया जाता है।

जैसे:

फल के आगे यदि 'वि' उपसर्ग लगा दिया जाए तो यह 'विफल' बन जाता है। अर्थ यहाँ भी एकदम उलट जाता है।

संगति - वि + संगति का अर्थ है, बुरी संगत।

वि + वाद - विवाद (विशेष वाद)

4. निर

इसका अर्थ 'अभाव' के रुप में लिया जाता है।

जैसे:

निर + आशा = निराशा

5. अव

'अव' का अर्थ खाली, अभाव अथवा विरुद्धता के लिए किया जाता है।

अव + गणना = अवगणना

अव + गुण = अवगुण

अव + तार = अवतार:

6. प्र

'प्र' का अर्थ होता है, अधिक्य, विशेष।

जैसे:

प्र + बल = प्रबल

प्र + कोप = प्रकोप

7. अप

'अप' का अर्थ होता है, <u>विरुद्ध</u>।

जैसे:

अप + कार = अपकार

अप + जय = अपजय

8. सम्

'सम्' का अर्थ होता है, <u>बराबर</u>।

जैसे:

सम् + यम = संयम

सम् + योग = संयोग

सम् + कृत = संस्कृत

9. सु

'सु' का अर्थ होता है, <u>अधिक</u>।

जैसे:

सु + शिक्षित = सुशिक्षित

सु + बोधित = सुबोधित

10. प्रति

'प्रति' का अर्थ होता है, <u>विपरीत</u> तथा <u>एकेक</u>।

जैसे:

प्रति + कूल = प्रतिकूल

प्रति + छाया = प्रतिछाया

प्रति + दिनम = प्रतिदिनम्

प्रति + एक = प्रत्येक

कुछ उपसर्ग ऐसे भी होते हैं जो परस्मैपदी धातु को आत्मनेपदी धातु बना देते हैं।

जैसे:

'जी' धातु में 'वि' लगाने पर 'विजयते'।

'रम्' में 'वि' लगने पर 'विरमते'।

यह आत्मनेपदी धातु बन जाती हैं।

उपसर्ग में यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि **किसी उपसर्ग युक्त धातु को यदि क्त्वा प्रत्यय होगा तो वह 'य' ल्यय् प्रत्यय में बदल जाता है।**

जैसे:

आ + गम् + क्त्वा = आगत्य

सम् + वर्ध + क्त्वा = संवर्ध्य

इस तरह आप रोज़ाना प्रयोग होने वाले शब्दों में 'उपसर्ग' को खोजने का प्रयास करें। तथा, यहाँ दिए गए एवं स्वयं खोजे गए अव्ययों की सहायता से नए शब्द एवं वाक्य बनाएं।